श्रम विभाग

श्रादेश

८९ दिनांक 28 फरवरी, 1984

सं. ग्रो.वि./जी. जी. एन./116-83/8480. --चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैसर्ज एस०केवे० वैलबैटस (प्रा०) लि०, 11, इन्डस्ट्रीयल इस्टेट, गुड़गांव, के श्रमिकों तथा प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई मौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि राज्यपाल हरियाणां इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिप्तियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त श्रीवित्यम की धारा 7-क के श्रीविन गित श्रौद्योगिक श्रीवकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिद्धिक्ट मामले, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमकों के वीच या तो विवादग्रस्त मामला (मामल) है/हैं, श्रथवा विवाद से संगत या सम्बन्धित मामला (मामलें) है/हैं, न्यायनिर्णय हेतु निद्धिक्ट करते हैं:—

- 1. क्या सन्तोषी देवी की पिछले वेतन सहित पून: नौकरी पर बहाली की जाए ? यदि हां, तो किस विवरण में ?
- 2. क्या अमिकों की नियुक्ति पत्न तथा स्थाई पत्न दिये जायें ? यदि हां, तो किस विवरण में ?

मुनीश गुप्ता,

ग्रायुक्त एवं सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम तथा रोजगोर विभाग ।

श्रम विभाग

म्रादेश

दिनांक 28 फरवरी, 1984

मं भौ.वि./सोनीपत/215-83/8381.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं असे फाम लैंबोरेट्रीज प्रा० लिं ०, 17वां माईल स्टोन जी. टी. रोड, कुण्डली, (सोनीपत), के श्रमिक श्री पूर्ण सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद ग्रिविनयम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये, हिरयाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं० 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रिधसूचना सं० 3864-ए.एस.श्रो (ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रिधिनयम की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला स्थायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है था उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:--

क्या श्री पूर्ण सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं.भी.वि./ग्राई.डी./एफ.डी./144-83/8388.—चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैं. कोन्टीनैन्टल रिफरैक्ट्रीज प्रा० लि०, प्लांट न० 42, सैक्टर 25, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री रियाजुदीन तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई प्रौधोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, प्रव, धौद्यागिक विवाद प्रिवित्यम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा, के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त ग्रिधित्यम की घारा 7(क) के ग्रधीन श्रीद्योगिक षधिकरण, हरियाणा फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवाद ग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा प्रवन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं :— ं

क्या श्री रियाजुदीन की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

्र सं. ग्रो.बि./एफ.डी / 10-84/8395.—चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैं • ज्योति इन्जीनियरिंग वर्कस मोहना रोड़, बल्लबगढ़ के श्रमिक श्री नन्तू खां तथा उसके प्रबन्धकों के मक्य इसमें इसके बाद विखित मामक्षे के सम्बन्ध में कीई सीकोणिच विदाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांक्रनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, ग्रीद्यागिक विवाद श्रिक्षितियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (म) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उवत ग्रिव्धितियम की धारा 7(क) के ग्राधीन श्रीद्योगिक प्रविक्षरण, हरियाणा, फरीदाबाद की नीचे वितिद्विष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रीमक तथा प्रवन्धकों के मध्य भ्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं:--

क्या श्री नम्मू खां की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं .मी.वि./माई.डी./एफ.डी./11-84/8402.—-चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मै० प्राईमरी की-म्राप्नेटिव लैण्ड डवैलपमैट वैंक लि० हथीन, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री पाहज मृहम्मद तथा स्सके प्रवत्यकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को ध्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रीशोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) हारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके हारा राज्य सरकार हारा उक्त अधिनियम की धारा 7(क) के प्रधीन श्रीशोगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदावाद, को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रीमक तथा प्रबन्धकों के सक्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री साहज मुहम्मद की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भो.वि./एफ.डी/17-84/8409.—चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैसर्ज शील वैकिजिंग इण्डस्ट्रीज, प्लाट नं 31, सैक्टर 25, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री बिन्देश्वरी शुकला तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई भौद्योगिक विवाद है:

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिये, ग्रव, ग्रीचोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की घारा 7(क) के ग्रिधीन श्रीचोगिक ग्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विविद्धित विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रीमक तथा प्रवन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री बिन्देश्वरी शुकला की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

स. थो. वि./एफ.ही./13-84/8416. --चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि में. कार्यकारी श्रमियन्ता हरियाणा भ्रवंत डवैलपर्मेंट श्रयोटी डिविजन नं III, सब डिविजन नं 12, सैक्टर 9, फरीदाबाद, के श्रमिक श्रो यामीन तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के संबंध में कोई श्रौद्योगिक विवाद है ;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु 'निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;़

इस लिए, प्रब, श्रोद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7(क) के श्रधीन श्रीद्योगिक श्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा श्रवन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री यामीन की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?